SHODH DHARA

शोध - धारा

वर्ष : २ अंक : २ मार्च २००६-अगस्त २००६

REPRINT

अर्द्धवार्षिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केंद्रित)

(Based on Humanities and Social Sciences)

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

शोध–धारा, वर्ष २, अंक २, पृष्ठ ९०–९३

राजनीति शास्त्र

मृत्यु की राजनीति के धुंध में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

- डॉ. नगमा खान*

६० वीं पुण्यतिथि पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु का विवाद फिर से शोध का विषय बन चुका है। ताइवान सरकार द्वारा नई दिल्ली के एक पत्रकार को भेजी एक चिट्ठी ने नेताजी की मौत के रहस्य में न केवल एक और तथ्य जोड़ दिया बल्कि इसे और अधिक गहरा दिया है। नेताजी पर शोध कर रहे पत्रकार अनुज धर को मिले इस पत्र में कहा गया है कि १८ अगस्त १९४५ को ताइवान में कोई विमान दुर्घटना नहीं हुई। सभी उपलब्ध रिकार्डों की छानबीन से पता चलता है कि १४ अगस्त से २५ अक्टूबर १९४५ के बीच ओल्ड मात्सुयामा हवाई अड्डे से उड़ने वाला नेताजी को ले जा रहा कोई विमान दुर्घटनाग्रस्त नहीं हुआ था।[1] अनुज धर ने ताइवान सरकार का यह पत्र मुखर्जी आयोग को भेज दिया। इससे पहले भी नेताजी की मृत्यु की जाँच के लिए दो आयोग गठित हो चुके हैं। वर्ष १९५६ में गठित शहनवाज हुसैन आयोग तथा वर्ष १९८० में गठित जी.डी. खोसला आयोग भी रहस्य पर से परदा नहीं उठा पाया। इस सन्दर्भ में मई १९९९ में मनोज कुमार मुखर्जी आयोग का गठन किया गया। नेताजी की मौत के रहस्य से परदा उठाने में मुखर्जी आयोग बेशक सफल नहीं हो पाया हो, लेकिन उसने अपनी रिपोर्ट में जो कुछ कहा है, वह सचमुच निष्पक्ष है। इसने पहले दोनों आयोग के निष्कर्षो को नकारते हुए आयोग ने कहा कि उस विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु नहीं हुई थी। लेकिन सरकार ने इस रिपोर्ट को सिरे खारिज भी कर दिया।

नेताजी की मृत्यु की घटना इतनी विवादित है कि किसी एक रास्ते को पकड़ पाना बहुत कठिन है। हमने इस प्रकरण में इतने आख्यानों को जन्म दे दिया है कि किसी एक निर्णय पर पहुँच पाना नितान्त कठिन है। कोई उन्हें शौलमारी का बाबा बनाता है तो कोई फैजाबाद में गुमनाम का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति। शोध का प्रारम्भ हुआ तो अन्त होना भी आवश्यक है। अनेक प्रकार की भ्रान्तियों को लेकर किसी भी शोध का अन्त नहीं किया जा सकता, पर विवेक व तथ्यों के आधार पर एक तार्किक व संतोष जनक निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए रूस की सहायता के आकांक्षी थे। उन्होंने सरकार से अपने रूस जाने की इच्छा प्रकट कर दी थी। बोस की योजना थी कि मंचुरिया पहुँचकर स्वयं को रूसी सेना के हवाले कर देगें। उसके बाद सोवियत सहायता प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। बोस के साथ हबीबुर्रहमान थे। हबीबुर्रहमान ने इस त्रासद दुर्घटना के इक्कीस वर्ष बाद १९६६ में रावल पिंडी से दार्जीशदा को नोट भेजा। मि. रहमान ने नोट में लिखा था– जापानी डॉक्टरो ने उनका भरसक इलाज किया, किन्तु दुर्भाग्य से उसी दिन १८ अगस्त १९४५ को रात साढ़े आठ बजे उनकी मृत्यु हो गयी।[2] नेताजी का अन्तिम संस्कार २० अगस्त १९४५ को तेइपेइ के शव दाहन में किया गया। उस समय कर्नल हबीबुर्रहमान, फारमोसा सेना के मेजर नागतोमो, दुभाषिया नाकामुरा, बौद्ध पुरोहित एंव शव दाहन का

* २०, तिलक नगर, उरई, (जालौन) २८५००१, उ०प्र०